तृतीय अध्याय

कविवर सुमित्रानंदन पंत : एक परिचय

पृष्ठ : २६ से ४५

१] जन्म तथा परिवार :-

हिमालय की श्री सुषमा से मंडित "कौसानी" नामक ग्राम में २० मई १९०० में [जेष्ठ कृष्णाष्टमी सं. १९५७ वि.] एक कवि का जन्म हुआ, जो आगे चलकर हिंदी साहित्य-संसार में "सुमित्रानंदन पंत" के नाम से सुविख्यात हुए ।

पंत जी के जन्म के कुछ घण्टों बाद ही उनकी माँ का स्वर्गवास हुआ । जन्म से ही मातृ-प्रेम से वंचित सुमित्रानंदन का पालन-पोषण उनकी फूफी ने बड़े लाड़ - दुलार से किया । आपकी माता का नाम सरस्वती देवी था तथा पिता का नाम गंगाधर पंत था । हिमालय की सुंदर उपत्यका में स्थित, अल्मोड़ा से ३२ मील उत्तर, समुद्रतल से साढ़े सात हजार फीट उपर उपस्थित कौसानी में एक विशाल चाय के बगीचे के, गंगाधर पंत मॅनेजर थे तथा स्वतंत्र रूप से लकड़ी का व्यापार भी करते थे । वे ख्याति-प्राप्त धनी व्यक्ति थे । फिर भी वे धार्मिक वृत्ति के उदार-सहृदय, तथा अत्यंत सीधे - साधे थे । तीन भाई और चार बहनों के बाद पंत जी का जन्म हुआ ।

सबसे छोटे सुमित्रानंदन पंत जी अपने पिताजी के विशेष स्नेह के अधिकारी तथा सबके दुलारे रहे ।

२] बचपन और प्रकृति :-

जन्म से ही माँ के स्नेह और प्यार से वंचित बालक सुमित्रानंदन पंत जी का बालापन प्रकृति माँ के हरीताभ आँचल में बड़े लाड़ - दुलार से गुजरा । वे घण्टों तक हिमगिरी के श्वेत - शृंगों को तथा प्राकृतिक सुषमा

को निहारते रहते -

"गिरी की उप्सरियों के संग
बीते किशोर वय के क्षण " [१]

प्रकृति के साथ यह तादात्म्य ही पंत के काव्य-सृजन की प्रेरणा बना । इसलिए पंत जी की "प्रारंभिक रचनाएँ प्रकृति की ही लीलाभूमि में लिखी गयी ।" [२] पंत जी के चारों ओर प्राकृतिक परिस्थितियाँ तथा प्राकृतिक सौंदर्य का ऐसा सजीव वातावरण था जिस से उन्हें काव्य - सृजन की प्रेरणा मिलती थी । प्रकृति के इस अनमोल दान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कवि कहते है, "मेरे किशोर - प्राण मूक कवि को बाहर लाने का सर्वाधिक श्रेय मेरी जन्मभूमि के उस नैसर्गिक सौंदर्य को है जिसकी गोद में पल कर मैं बड़ा हुआ हूँ ।...... प्रकृति निरीक्षण और प्रकृति प्रेम मेरे स्वभाव के अभिन्न अंग ही बन गए हैं । जिनसे मुझे जीवन के अनेक संकट क्षणों में अमोघ सांत्वना मिली है ।" [३]

पंत जी के चारों ओर फैले इस प्राकृतिक सुंदरता में एक प्रकार की तपोदभूत पावनता थी । डॉ. हरिवंशराय बच्चन, पंत और प्रकृति के इस अटूट बंधन की चर्चा करते समय लिखते हैं , " इस सुंदरता और पावनता को पंतजी के भावुक हृदय ने जी भर पी लिया था ।" [४] पंत जी के वैयक्तिक तथा साहित्यिक जीवन में हिमाद्रि का स्थान एक दिपस्तंभ के समान है जो आपने संदेश एवं प्रेरणा से उनका पथ आलोकित करता रहा । हिमालय के

---

१. स्वर्णकिरण : सुमित्रानंदन पंत , पृ. ८

२. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास [भाग १०] : संपादक डॉ. नगेंद्र, पृ. १९४

३. रश्मिबंध : परिदर्शन : सुमित्रानंदन पंत, पृ. २ [प्रथम संस्करण]

४. आज के लोकप्रिय कवि : सुमित्रानंदन पंत : प्रवेशिका संपादक हरिवंशराय बच्चन, पृ. १०

प्रति अपनी हार्दिक भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हुए पंत जी कहते हैं, "सर्वोपरि हिमालय का आकाशचुंबी सौंदर्य मेरे हृदय पर एक महान संदेश, एक स्वर्गोन्मुखी उदात्त आदर्श तथा एक विराट व्यापक आनंद, सौंदर्य तथा तप:पूत पवित्रता की तरह प्रतिष्ठित हो चुका था ।" [५]

सन् १९११ में उनका उपनयन संस्कार धूमधाम से संपन्न हुआ । "उपनयन संस्कार के पाँचवे दिन पंत अल्मोड़ा आ गये और यहाँ आकर उन्होंने अपने जनेऊ को उतार दिया ।" [६] अनावश्यक रीति-रिवाज तथा अंधविश्वासों को पंत जी के जीवन में स्थान नहीं था । इस संदर्भ में सुश्री शांति जोशी का कथन इस प्रकार है, "रूढ़िवादी अर्थ में पंत कोई त्यौहार नहीं मानते है - न वे पूजा करते हैं, न विधियों को मानते है ।" [७] वैयक्तिक तथा सामाजिक विकास में बाधा बननेवाली इन रूढ़ियों, नीति-नियमों को उतारकर फेंक देने का आवाहन उन्होंने आगे चलकर अपने प्रगतिवादी दौर में किया है । "युगवाणी" में प्रतिपादित विचारधाराओं में से यह एक महत्त्वपूर्ण विचारधारा है । " पिछले युगों के उन मृत आदर्शों और जीर्ण रूढ़ि रीतियों की तीव्र भर्त्सना, जो आज मानवता के विकास में बाधक बन रही है ।" [८]

३] शिक्षा :-

गाँव की एक छोटी सी पाठशाला में पंत जी की शिक्षा का श्रीगणेश हुआ । वहाँ उनके फुफेरे भाई ही अध्यापक थे । पाँच से सात साल

---

५. रश्मिबंध : परिदर्शन : सुमित्रानंदन पंत, पृ. ४ [प्रथम संस्करण]
६. पंत का प्रगतिवादी काव्य : प्रमिला त्रिवेदी, पृ. ७
७. जीवन और साहित्य : शांति जोशी , पृ. २०५ से
८. युगवाणी : दृष्टिपात : सुमित्रानंदन पंत, पृ. १०

की उमर में ही पंत जी ने अपने फूफाजी की सहायता से अमरकोश, मेघदूत, रामरक्षा-स्तोत्र , चाणक्य नीति आदि के अतिरिक्त अनेक शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर लिया था । संस्कृत और पर्शिअन का ज्ञान उन्हे अम्बादत्त जोशी से प्राप्त हुआ ।

सन् १९०९ में पंतजी ने अप्पर प्रायमरी की परीक्षा उत्तीर्ण की । १९११ में वे अल्मोड़ा के गव्हर्नमेंट हाईस्कूल में चौथे दर्जे में दाखिल हुए । बीच के दो सालों में उन्होने घर में ही रहकर अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण की । अल्मोड़ा में मँझले भाई रघुवरदत्त उस समय वहीं नवें दर्जे में पढ़ते थे, इसलिऐ दोनों साथ रहते थे । १९१७ में पंत जी ने मिडल पास किया । १९१८ में पंत जी ने नवी कक्षा पास की । इसके बाद पंत जी अपने एक भाई के साथ बनारस चले गये और वहाँ के "जयनारायण हाईस्कूल" से उन्होंने "स्कूल लीविंग" की परीक्षा १९१९ में व्दितीय श्रेणी में पास की । कॉलेज के सुनहरे जीवन का आरंभ पंत जी ने प्रयाग के म्योर सेंट्रल कॉलेज से किया । १९२० के पश्चात् देश में बड़ी हलचल मच गयी । १९२१ में गांधीजी के असहयोग आंदोलन का शंखनाद हुआ । चारों ओर महात्मा गांधीजी के असहयोग की धूम थी । इसी समय महात्माजी प्रयाग पहुँचे । उन्होंने छात्रों को सम्बोधित करके उनको कॉलेज छोड़ देने को कहा । महात्माजी के भाषण से प्रभावित होकर पंत जी ने भी कॉलेज छोड़ दिया । जीवन की इस महत्त्वपूर्ण घटना को शब्दांकित करते हुए पंत जी कहते हैं -

" वह पहला असहयोग था
बापू के शब्दों से प्रेरित
विदा छात्र के जीवन को दे मैं
करने लगा स्वयं शिक्षित ।" [१]

---

१. चिदंबरा : आत्मिका : सुमित्रानंदन पंत, पृ ३२९

इस असहयोग का असली मतलब था, विश्वविद्यालय की पढ़ाई से संन्यास लेना । इस आवेश का परिणाम यह हुआ कि पंत जी की शिक्षा अधूरी रह गयी क्यों कि वे एफ.ए. के आखिरी साल के विद्यार्थी थे । पंत जी के विद्यार्थी-जीवन के बारे में डा. नगेंद्र का यह कथन पूर्णत: सार्थ है, " पन्तजी का विद्यार्थी - जीवन विशेषता शून्य है । प्रकृति का यह कवि बन्द दीवारों में पढ़ता ही क्यों ? उन्होंने तो जो कुछ सीखा पढ़ा है वह स्वयं चिन्तन करके, अथवा स्वतंत्र रूप से संस्कृत, बंगला और अँगरेजी की काव्य-शालाओं में अध्ययन करके ।" [१०]

४] साहित्य-साधना तथा जीवनी :-

साहित्य के प्रति पंत जी का रुझान बाल्यकाल से ही था । पल-पल परिवर्तित-प्रकृति-वेश का इसमें प्रथम योगदान था, साथ ही घरका वातावरण भी इसके अनुकूल था । पंत जी के बड़े भाई मेघदूत गाते थे । पंत जी उसे ध्यान से सुनते थे । छुट्टियों में आए भाई और उनके दोस्त गज़ल गाया करते थे । पंत जी को गज़ल की लय अच्छी मालूम हुई । सात साल की उमर में ही उन्होंने एक गज़ल लिखी थी । कौसानी में अक्सर साधु आया करते थे । पंत जी के पिता क- पं. गंगाधर पंत साधु सेवी थे । अत: बचपन से ही पंत जी के हृदय में साधुओं के प्रति श्रध्दा-भाव था । "१९१५ में अल्मोड़ा में उन्होंने स्वामी सत्यदेव का व्याख्यान सुना । इससे पंत जी में हिंदी प्रेम और देश भक्ति का जोश जगा ।" [११] पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त हिंदी साहित्य के

---

१०. सुमित्रानंदन पंत : डॉ. नगेंद्र , पृ १७

११. हिंदी के युग प्रवर्तक कवि पन्त : राहुल सांस्कृत्यायन : सुमित्रानंदन पंत : संपादिका शचीरानी गुर्टू , पृ. ३८

स्वाध्याय की ओर पंत जी की रुचि बढ़ने लगी उनके बड़े भाई राष्ट्रभाषा आंदोलन से प्रभावित थे तथा हिंदी में कविता भी लिखते थे । इस वातावरण के प्रभाव से पंत जी साहित्य सृजन की ओर उन्मुख हुए ।

उन दिनों पंत जी "सरस्वती" तथा मैथिलीशरण गुप्तजी की कविताओं को बड़े शौक से पढ़ते थे । भाई की पुस्तकालय के लिए उन्होंने अनेक कोश तथा सद्ग्रंथ खरीदे थे । अब उन्होंने काव्य ग्रंथों का संग्रह करना आरंभ किया । पंत जी के इस संग्रह में द्विवेदी युग के कवियों की रचनाओं के अलावा प्रेमचंद के उपन्यास, बंगला, मराठी आदि पुस्तकों के अनुवाद और मध्ययुगीन कवियों के ग्रंथ थे । उस समय प्रसिध्द होनेवाली "सरस्वती" "मर्यादा" आदि प्रसिध्द पत्रिकाएँ मंगाकर पढ़ते थे । १९१६ में अल्मोड़ा में आए एक पंजाबी साधु के प्रभाव के कारण उनका ध्यान योग, वैराग्य की तरफ आकर्षित हुआ । महाभारत, रामायण, वैराग्यशतक को वे बड़े चाव से पढ़ते थे । इस तरह "एक ओर उनका ध्यान योग, वैराग्य की ओर खिंचा हुआ था और वह पढ़ाई के घण्टों को साधु के सत्संग में बिताता था या धार्मिक पोथियों में डूबा रहता था, दूसरी ओर साहित्य की ओर उसकी स्वाभाविक रुचि अब जाग उठी थी ।" [१२]

पंत जी का प्रकृति-प्रेम अब साहित्य-प्रेम में अभिव्यक्ति पाने लगा । आश्चर्य की बात है कि जिस युवक ने आगे चलकर आधुनिक हिंदी कविता के विकास में बड़ा योगदान दिया और उसे दो बार नया मोड़ दिया ।" [१३]

---

१२. हिंदी के युग प्रवर्तक कवि पंत : राहुल सांस्कृत्यायन सुमित्रानंदन पंत : संपादिका शचीरानी गुर्टू, पृ. ३८

१३. "हिंदी काव्य-क्षेत्र में पंत का अभ्युदय एक अनोखी घटना है । साहित्य को नया मोड़ देनेवाला इतना महान व्यक्तित्व यदा-कदा पृथ्वी पर जन्म लेता है ।"
वही, पृ. ३४

उसने अपने साहित्यिक जीवन का आरंभ उपन्यास लिखकर किया । १९१५ में पंत जी ने "हार" नामक उपन्यास लिखा और हिंदी साहित्य संसार में अपनी विजय निश्चित की । "१९६० में पंत जी की षष्ठिपूर्ति के अवसर पर यह उपन्यास साहित्य सम्मेलन, प्रयागव्दारा प्रकाशित किया गया है । " १४

पंत जी की आरंभिक रचनाएँ उस समय अल्मोड़ा से निकलने वाली हस्तलिखित पत्रिका "अल्मोडा-अखबार" से प्रकाशित हुई । शामाचरण पंत की हस्तलिखित पत्रिका "सुधाकर" में भी उनकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगी । पंत जी ने अपनी काव्य-कला को अधिक निखारने और सँवारने के लिए "छंद-प्रभाकर" "काव्य-प्रभाकर" के साथ मध्यकालीन कवियों की कृतियों का सूक्ष्मता से अध्ययन किया । विधापति की कल्पना, नवीन सौंदर्यबोध तथा कवित्व की शक्ति ने उन्हें मोह लिया । नाथूराम शंकर शर्मा के कई छंदों ने उन्हें मुग्ध किया। मध्ययुगीन कवियों में उन्हें केशवदास की अपेक्षा "मतिराम" और "सेनापति" अत्यंत प्रिय कवि थे । "पद्मसिंह" की भूमिका पढ़ने के बाद उन्हे बिहारी में रुचि उत्पन्न हुई । तुलसी-रामायण तथा कालिदास के मेघदूत और शाकुंतलम् उन्हें पहले ही आकर्षित कर चुके थे । "मेघदूत और शाकुंन्तलम् का अब स्वयं भाव-विभोर होकर पाठ करने लगे थे और इसने उनके मन के अनेक चित्रमय सौन्दर्यपूर्ण गवाक्षों को खोल दिया । मेघदूत की विरहिणी और शाकुन्तलम् की तपस्विनी नारी ने उनकी बाल-कल्पना में अमिट छाप छोड़ दी । करूण रस के चरण और छंद उन्हें प्रिय लगते । धीरे - धीरे उनकी धारणा परिपक्व होने लगी कि हृदयस्पर्शी बनने के लिए काव्य को करूण अवश्य होना चाहिए । भावना और विचार की इस अनुभूति को ही पंत ने "हार"

---

१४. कवियों में सौम्य संत [सुमित्रानंदन पंत] : हरिवंशराय बच्चन, पृ. ६४

"ग्रन्थि" "उच्छवास" आँसू" "परिवर्तन" आदि में प्रश्रय दिया ।" [१५]

पंत जी की प्रथम कविता "गिरजे का घण्टा" की मैथिलीशरण गुप्तजी ने भूरि प्रशंसा की थी । इससे "प्रोत्साहित होकर पंत जी ने यह कविता "सरस्वती" में प्रकाशनार्थ भेजी थी, हाशिए पर गुप्तजी की प्रशंसा रहने के बावजूद भी "सरस्वती" के संपादक से अस्वीकृत की गयी थी ।" [१६] इससे हतोत्साहित हुए बिना अपयश की इस प्रथम सीढ़ी से छलांग मारकर पंत जी हिंदी साहित्याकाश में स्वच्छंद विचरण करते रहे और साहित्य के नये-नये आयाम पार करते रहे ।

सन् १९१८ में विश्वविद्यालय में कविता की प्रतियोगिता हुई जिसमें पंत जी सफल रहे । बनारस में किसी बंगाली मित्र व्दारा उनका परिचय कवींद्र रवींद्रनाथ टैगोर से हुआ । उनके व्यक्तित्व से पंतजी बहुत प्रभावित हुए । १९२१ में "म्योर सेंट्रल कॉलिज" के होस्टल में कवि संमेलन हुआ । पंत जी ने अपनी "छाया" कविता पढ़ी तब सभापति हरिऔध जी ने खुश होकर अपने गले की माला उनके गले में डाल दी ।

सन् १९२१ में गांधीजी के भाषण से प्रभावित होकर उन्होने कॉलेज तो छोड़ दिया मगर इस आंदोलन में वे सक्रिय सहयोग न दे सके । शराब की दुकानों पर पिकेटिंग करना, गलियों में नारे लगा के फिरना, जेल में तसले बजाना उनसे न हुआ । "उन्होंने न खद्दर पहना और न गांधी टोपी लगाई - उनकी लच्छेदार लटों पर वह जम भी नहीं सकती थी ।" [१७]

---

१५. जीवन और साहित्य : शांति जोशी, पंत का प्रगतिवादी काव्य : प्रमिला त्रिवेदी, पृ. १० से

१६. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास [भाग १०] : संपादक डॉ. नगेंद्र, पृ १९५

१७. कवियों में सौम्य संत [सुमित्रानंदन पंत] डॉ. हरिवंशराय बच्चन, पृ ६२

इन्हीं दिनों उनके परिवार पर संकटों के बादल मँडरा रहे थे । उसी में इस आवेश का परिणाम यह हुआ कि, "सन् १९२१ में जब मैंने कॉलेज छोड़ दिया, आर्थिक व्दार तो मेरे लिए उसी दिन बंद हो गया था । मेरी माँ नही रही । पिता भी चले गए । भाइयों ने विशेष काम नहीं किया । इस प्रकार घर का सहारा भी चला गया । मैं अच्छे ढंग से पला हूँ, अच्छे ढंग से रहने का आदि हूँ, और सभी बहुत अच्छे ढंग से रहें - इस बात का पक्ष पाती हूँ ।"[१८] परंतु इस आवेश के परिणाम की दूसरी बाजू हिंदी काव्य के लिए लाभप्रद हुई । कॉलेज की चार दीवारी से मुक्त पंत जी को शांति, समय और स्वतंत्रता की एकदम प्राप्ति हुई । कॉलेज के नियमबध्द शिक्षा से मुक्त उनकी काव्य-प्रतिभा खुले आसमान में विचरन् करने लगी । उनकी सृजन शक्ति पर अनेकानेक नवपल्लव फूटे और "पल्लव" में संग्रहित हुए । "अपने जीवन के सबसे अधिक प्रभाव-प्रवण काल में जो भावनाएँ और कल्पनाएँ उन्होंने अल्मोड़ा की सुंदर पहाड़ियों में और घाटियों में सँजोई थी और अनेक वर्षों से उनकी स्मृति में सुप्त पड़ी थीं, वे अब फिर से सजग होने लगी ।" [१९]

वीणापाणि सरस्वति के चरणों में पंत जी ने "वीणा", "ग्रन्थि", "पल्लव", "गुंजन" जैसे एक से बढ़कर एक पुष्प अर्पित किए । उनकी काव्य - प्रतिभा उत्तरोत्तर निखरती रही । मगर वीणापाणि के इस उपासक का नीजि जीवन इस समय दु:ख के बादलों से घिरा हुआ था । १९२१ से २९ तक उनपर दैविक-दैहिक प्रकोप हुए । पंत जी के परिवार की आर्थिक स्थिति

---

१८. कविवर पंत और उनका "आधुनिक कवि" : प्रो. रामरजपाल व्दिवेदी पृ. ११

१९. कवियों में सौम्य संत [सुमित्रानंदन पंत] : डॉ. हरिवंशराय बच्चन, पृ. ६६-६७

डावाडोल हो उठी जिसके कारण पिता का घर बेंचना पड़ा । १९२६ में मँझले भाई की और १९२७ में पिता की मृत्यु हो गयी । १९२९ तक आते आते कोमलमना कवि का स्वास्थ्य चिंताओं के बोझ से चौपट हो गया ।

डा. जोशी, जो पंत जी के संबंधी भी थे, ने पंत जी की परीक्षा की और पूर्ण विश्राम करने की सलाह दी ।

कालाकांकर के युवराज कुँअर सुरेशसिंह पंत जी के मित्र थे और उनकी कविता के बड़े प्रशंसक थे । उन्होंने पंत जी को कालाकांकर आने का निमंत्रण दिया । पंत जी के डूबते मन और शरीर को मानो संजीवनी सी मिलगई । इस निमंत्रण को उन्होंने स्वीकारा और १९३० से ४० तक यहीं बने रहें । आम आबादी से एक मिल दूरी पर स्थित "नक्षत्र" नामक निवास में वे रहने लगे । यहाँ उनका स्वास्थ्य सुधरा और मानसिक स्थिरता प्राप्त हुई ।

जीवन जब निराशा से भर जाता है तब मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति धर्म की ओर झुक जाती है । मगर पंत जी धर्म की अपेक्षा अध्यात्म की ओर झुके । यहाँ उन्होंने भारतीय अध्यात्म और पाश्चात्य दर्शन का अध्ययन किया । इसमें वे हीगेल और कार्ल-मार्क्स के विचारों से प्रभावित हुए । उपनिषदों के गंभीर अध्ययन से उनके जीवन की दिशा ही बदल गई । होस्टल के दिनों पंत जी अपने किशोर सखा पी. वी. जोशी के कारण मार्क्सवादी विचारधारा के संपर्क में आए थे । उनमें प्राय: ही नये राजनीतिक आर्थिक सिद्दान्तों की चर्चा और उन पर वाद-विवाद होता रहता था । पी. वी. जोशी पूर्ण साम्यवादी थे । उनकी निष्कपट मैत्री तथा ममता और सहानुभूति के दृष्टिकोण के कारण मार्क्सवाद तथा साम्यवाद के अनेक दुर्बल, सशक्त पक्षों तथा उग्र सिद्दान्तों को समझने में पंत जी को

कोई कठिनाई नहीं हुई । "मार्क्सवाद का जटिल आर्थिक पक्ष मुझे मेरे भाई स्व. देवी दत्त ने समझाया । अपने मित्र तथा भाई के संपर्क में आकर मैं मार्क्सवाद के गहन कांतार को अपने ढीठ कल्पना पंखों से, साहसपूर्वक, अत्यंत उत्साह तथा हर्षानुभूति के साथ पार कर सका ।" [२०]

यही नवीन चेतना कालाकांकर के गाँवों का वातावरण पाकर "युगवाणी" और "ग्राम्या" की रचनाओं में उन्मुक्त रूप से अभिव्यक्त हुई है । मार्क्सवाद और भारतीय अध्यात्म दर्शन का गंभीर अध्ययन करने के बाद अपनी धारणा का स्पष्टीकरण करते हुए पंत जी आधुनिक कवि भाग २ में कहते हैं, "ऐतिहासिक भौतिकवाद और भारतीय अध्यात्मदर्शन में मुझे किसी प्रकार का विरोध नहीं जान पड़ा । क्यों कि मैंने दोनों का लोकोत्तर कल्याणकारी सांस्कृतिक पक्ष ही ग्रहण किया है ...... मानवता एवं सर्वभूत हित की जितनी विशद भावना मुझे वेदान्त में मिली, उतनी ही ऐतिहासिक दर्शन में भी ।" [२१]

मार्क्सवाद संबंधी अपनी भूमिका स्पष्ट करते हुए पंत जी उत्तरा की भूमिका में कहते है, " मैं मार्क्सवाद की उपयोगिता एक व्यापक समतल सिध्दान्त की तरह स्वीकार कर चुका हूँ । किन्तु सांस्कृतिक दृष्टिकोण से उसके रक्त-क्रांति और वर्ग-युध्द के पक्ष को मार्क्स के युग की सीमाएँ मानता हूँ ।" [२२]

पंतजी को मार्क्सवाद का लोकपक्ष अधिक सशक्त लगा इसलिए उसका समर्थन करते हुए पंत जी कहते हैं, " मार्क्सवाद का आकर्षण उसके खोखले

---

२०. चिदंबरा : चरण चिह्न : सुमित्रानंदन पंत, पृ. १५

२१. आधुनिक कवि भाग दोन : पर्यालोचन : सुमित्रानंदन पंत, पृ २४

२२. उत्तरा : प्रस्तावना : सुमित्रानंदन पंत , पृ. ६

दर्शन में नहीं है , उसके वैज्ञानिक [लोकतंत्र के रूप में मूर्त] आदर्शवाद में है जो जनहित अथवा सर्वहारा का पक्ष है, किन्तु उसे वर्ग - क्रांति का रूप देना अनिवार्य नहीं है । वर्ग युध्द का पहलू फासिज्म की तरह निकट भविष्य में पूँजीवादी तथा साम्राज्यवादी युग की प्रतिक्रिया के रूपमें विकृत एवं विकिर्ण हो जाएगा ।" [२३]

मानवता एवं सर्वभूत की यह विशाल दृष्टि जो बीज रूप में उनके चिंतन एवं विचार में पड़ी थी उसका भावात्मक विकास कालाकांकर के वास्तव्य में हुआ । कालाकांकर में कुँअर सुरेशसिंह के साथ पंत जी गाँवों में जाते थे । ग्राम और ग्रामीण जीवन को उन्होंने अपनी पैनी दृष्टि से अत्यंत नजदिक से परखा । वे ग्रामीण जीवन से परिचित हो गये और यथार्थ की अनुभूति होने लगी । उन्हे भारतीय ग्रामों में बसनेवाले दरिद्रनारायण के दरबार के दर्शन करने का अवसर मिला ।

इस तरह मार्क्सवाद के आर्थिक एवं सामाजिक सत्य को गाँवों के जीवन की पृष्ठभूमि में उन्होंने साक्षात पाया । आसमान में विचरन करनेवाली पंत जी की प्रतिभा यथार्थ के धरातल पर आने लगी । पंत जी की आँखें खुली और उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन आ गया । "मेरा मन परिवर्तनशील अनित्य वास्तविकता से उपर उठकर नित्य सत्य की विजय के गीत गाने को लालायित हो इ उठा और उसके लिए आवश्यक साधना को भी अपनाने की तैयारी करने लगा है और उसे यह भी अनुभव होने लगा कि, चाहिए विश्व को नव जीवन ।" [२४]

---

२३. प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ : डॉ. रामविलास शर्मा, पृ. ४५ से

२४. मैं और मेरी कला : सुमित्रानंदन पंत
सुमित्रानंदन पंत : संपादिका शचीरानी गुर्टु , पृ. ६

इधर पंत जी की जीवन सरिता कलखाते बह रही थी । १९४३-४४ में उन्होंने श्री उदयशंकर के साथ कल्चर सेंटर अल्मोड़ा में काम किया । इसी के साथ वे भारत के विभिन्न नगरों में घूमते रहे । उदयशंकर के "नृत्य-चित्र कल्पना" के करारानुसार वे मद्रास चले गये । वहाँ पाँडिचरी में वे श्री अरविंदजी के संपर्क में आए । पंत जी अरविंद-दर्शन से अत्यधिक प्रभावित हुए । १९५० मे ५७ तक वे आल इंडिया रेडियो पर हिंदी नियोजक के पद पर रहे । उन्हों ने अनेक रेडियो रूपक प्रसारित किए जो "रजतशिखर", "शिल्पी" और "सौवर्ण" में संगृहित हैं । १९५८ में वे आल इंडिया रेडियो के परामर्शदाता बने और प्रयाग में स्थित हो गये ।

२९ डिसंबर १९७७ को प्रकृति के अनन्य उपासक, प्रकृति प्रेमी श्री सुमित्रानंदन पंत प्रकृतिवासी हो गये ।

पंत जी की रचनाओं के क्रमिक विकास के अनुसार उनकी रचनाओं के तीन युग स्पष्ट है -

१] छायावादी काव्य युग

२] प्रगतिवादी काव्य युग

३] आध्यात्मिक काव्य युग

"वीणा" के रूप में पंत जी ने छायावादी काव्योपवन मे एक सुकुमार पौधा रोपा था जिसका विकास आगे चलकर "पल्लव" और "गुंजन" के रूप में हुआ । अपनी इस प्रथम कृति को कवि ने अपना दुधमुँहा प्रयास कहा है । इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ १९१८-१९ की लिखी हुई हैं । "वीणा" १९२७ मे प्रकाशित हुई ।

"वीणा" के पश्चात् पंत जी ने "ग्रन्थि" की अमर प्रणय-गाथा को सूत्रबध्द किया । "गन्थि" विरह काव्य है जिससे दो प्रेम पूरित हृदय विधना के अदभूत विधान से एक दूसरे से दूर हो जाते हैं । "ग्रान्थि" १९२८ में प्रकाशित हुई ।

यौवन और प्रेम के गीत गाते हुए १९२६ में "पल्लव" प्रकाशित हुई । "पल्लव" में कवि ने उन्मुक्त प्रणयगान किया है । "पल्लव" को पढ़ने के उपरान्त स्वर्गीय शुकदेव बिहारी मिश्र [मिश्रबन्धु] का आत्मोदगार था, "मैं केवल हिंदी के नवरत्नों को ही महाकवि मानता हूँ । परंतु "पल्लव" को पढ़कर मुझे ऐसा ज्ञात होता है कि यह बालक भी महाकवि है ।" [२५] "पल्लव" की श्रेष्ठता प्रस्थापित करता हुआ महाकवि निराला का सहजोदगार इस प्रकार हैं, "परिवर्तन [पल्लव की कविता] किसी भी बड़े कवि की श्रेष्ठ कविता से निस्संकोच मैत्री कर सकता है ।" [२६] "पल्लव" की भूमिका "पल्लव" की कीर्ति में चार चाँद लगाती है, उसे छायावाद का घोषणापत्र कहा गया है - " पल्लव की भूमिका छायावाद का "मेनिफेस्टो" थी ।" [२७]

कवि के आत्मा के उन्मन गुंजन को मुखरित करनेवाला काव्य-संग्रह है "गुंजन"। यहाँ कवि कहते है, " मैं "पल्लव" से गुंजन में अपने को सुंदरम् से शिवम् का भूमि पर पदार्पण करते हुए पाता हूँ । " [२८] "पल्लव" में कवि लोक कल्याण का संधान करता है और "गुंजन" में चिंतन लोक में

---

२५ सुमित्रानंदन पंत : काव्य, कला और दर्शन : गोपालदास "नीरज" और सुधा सक्सेना, पृ ११४

२६ सुमित्रानंदन पंत : डा. नगेंद्र, पृ. १२१

२७ जीवन और साहित्य : शांति जोशी, पृ. ४०८

२८ आधुनिक कवि भाग दोन : पर्यालोचन : सुमित्रानंदन पंत, पृ. ५-६

उतरता है । कवि सौंदर्य-द्रष्टा न होकर मानव-द्रष्टा बने हैं । "गुंजन" १९३२ में प्रकाशित हुई ।

छायावादी युग के अंत की घोषणा करता हुआ "युगान्त" का प्रकाशन १९३६ में हुआ । पंत जी की रचनाओं के विकास क्रम के सोपान पर नये मोड़ को प्रस्तुत करनेवाली रचना "युगान्त" का बड़ा महत्त्व है । यहाँ कवि के जीवन दर्शन में एक परिवर्तन आता है । यहाँ कवि प्रकृति के नाश और निर्माण के व्द्व्दात्मक दर्शन को समझ सका है ।

१९३९ में पंत जी के "रूपाभ" का प्रकाशन हुआ जो पंत की इस नवीन काव्य - चेतना का प्रथम संवाहक हुआ था । "रूपाभ" शब्द केवल नाम ही नहीं था - नवीन चेतना का प्रतीक भी था, उसमें यह व्यंजना स्पष्ट थी कि छायावादी आभा नवीन युग के सौंदर्यबोध को व्यक्त करने में असमर्थ हो चुकी है - नया युग केवल आभा नहीं है उसके साथ रूप की भी माँग कर रहा है । अत छायावाद के अमूर्त सौंदर्य के स्थान पर मूर्त सौंदर्य काव्य का विषय बना - भाव के तारल्य के स्थान पर वस्तु की दृढ़ रेखा सौंदर्य का प्रतिमान बनी ।" [२९]

१९३९ में ही युग के गद्य को वाणी देती हुई युगवाणी प्रकाशित हुई ।

१९४० में ग्रामीण जीवन के अनेकाधिक मयुरपंखों का संकलन "ग्राम्या" प्रकाशित हुआ ।

महात्मा गांधी की मृत्यु से वे अत्यंत उदास हो गये । उनके आँसू "खादी के फूल" मे श्रध्दांजली के रूप में संकलित हुए है । [सहलेखक हरिवंशराय बच्चन]

---

२९. आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ : हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास : संपादक : डॉ. नगेंद्र, पृ ६ से

अरविंद दर्शन से आलोकित रचनाओं में स्वर्ण किरण, स्वर्णधूलि और उत्तरा का प्रमुख स्थान है । ये तीनों रचनाएँ एक ही भाव - विचार एवं चिंतन से अनुप्राणित है । इनकी कविताओं का प्रधान स्वर आध्यात्म ही है । और इस आध्यात्मिक चेतना का आधार मनोवैज्ञानिक है ।

पंत जी का नवीनतम और अत्यंत साहसिक प्रयोग " कला और बूढ़ा चाँद" है जो उनके अट्ठावनवे वर्ष की रचना है । इसका प्रकाशन १९५९ में हुआ और १९६१ में "साहित्य एकादमी" ने इसपर ५००० रुपयों का पुरस्कार दिया । इसी वर्ष भारत सरकार ने उन्हें "पद्म भूषण" की उपाधि से अलंकृत किया है । सोवियत - भारत मैत्री संघ के निमंत्रण पर आपने रूस तथा अन्य यूरोपिय देशों की यात्रा की ।

"लोकायतन" पंत जी का एक आत्मिक स्वप्न था जिसमें एक सांस्कृतिक केंद्र अथवा संस्था की योजना बनाई गयी थी । १९६४ में यह काव्य कृति प्रकाशित हुई, जिसे १९६५ में सोवियत भूमि की ओर से प्रथम "नेहरू पुरस्कार" दिया गया । उत्तर प्रदेश की सरकार ने पंत जी को साहित्यिक सेवा के लिए [रुपये १००००] पुरस्कृत किया ।

१९५९ में प्रकाशित"चिदंबरा"को १९६९ में "भारतीय ज्ञानपीठ" पुरस्कार [१ लाख रुपये] से गौरवान्वित किया गया ।

आधुनिक हिंदी कविता में खड़ीबोली की प्रतिष्ठा करने मे पंत जी का बड़ा योगदान रहा है "हिंदी कविता को उन्होंने एक नवीन भाषा, नवीन रूपरेखा और नवीन कला प्रदान की है - उन्होंने खुले रूप से हिंदी कला की मूर्ति गढ़ी है ।" [३०]

---

३०. सुमित्रानंदन पंत : डॉ. नगेंद्र , पृ १३०

8670
A

५] पंत जी का व्यक्तित्व :-

पंत जी के साहित्यिक व्यक्तित्व के समान शारीरिक व्यक्तित्व भी हिंदी साहित्य में बहुचर्चित रहा है ।

पंत जी का रंग बहुत अधिक गोरा नहीं था पर उनके चेहरे की रेखाएँ बड़ी ही आकर्षित थी । उनके नेत्र बड़े ही भावपूर्ण, एक हल्की - सी आभा लिए तथा स्वप्निल थे । उनकी नाक बड़ी तेज, सुंदर तथा नुकीली थी । उनकी उँचाई लग भग पांच फूट तीन इंच के आसपास थी । उनकी सुकुमार एवं गठित वपु तथा उन्नत ललाट और उससे भी अधिक उनके चिर कुमार चिकुर आकर्षण के सहज बिंदु है । बच्चन के लिए तो उनके बालों का ही सब से अधिक आकर्षण था । बच्चन के अनुसार, केश विन्यास की चेतना पंत जी को जगज्जेता नेपोलियन के युवावस्था के एक चित्र से मिली । पंत जी के प्रथम दर्शन के प्रभाव का वर्णन करते हुए डा. बच्चन कहते है, "उनके घने, घुंघराले, सुनहलें बालों तथा उनकी विचित्र वेश-भूषा की ओर लोगों की आँखें बरबस ही खिंच जाती । जो उन्हें नहीं जानते थे वे उन्हें समझते थे कोई ऐंग्लो-इंडियन लड़की है जो कोट पतलून पहनकर चली जा रही है । जो उन्हें जानते थे वे उनमें आदर्श स्मानी कवि को साक्षात मूर्तिमान देखते, जिसे शेली या कीट्स के काँधे से काँधा मिलाकर खड़े होने में तनिक भी संकोच न हो ।" [३१]

श्री राजेंद्रसिंह गौड पंत जी के व्यक्तित्व के बारे में लिखते हैं, "उनकी वेश-भूषा, उनकी रहन-सहन, उनकी चालढाल से हमें उनके आंतरिक सौंदर्य का, उनकी कला-प्रियता का आभास मिल जाता है । वह अपने

---

३१. कवियों में सौम्य संत [सुमित्रानंदन पंत] : हरिवंशराय बच्चन पृ. ६४ - ६५

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कला प्रेमी है ।"[३२] ऐसा लगता है विधाता ने बड़े मनोयोग से उन्हें सजाया - सँवारा है । श्री शिवचन्द्र नागर के मतानुसार " इस मूर्ति का सौंदर्य शेली का सा शांत सौम्य और दिव्य सौंदर्य था - कुछ कुछ वैसा ही जैसे शरद चाँदनी में तैरनेवाले धवल मेघ खंडों का सौंदर्य ।"[३३]

पंत जी शरीर से जितने सुंदर है उतने ही सुंदर वे हृदय से भी है । दुसरों के गुण गाते वे अघाते नहीं । उनका हृदय जैसा निर्मल, वैसा ही कोमल भी । वे स्वभाव से भी बड़े संकोचशील थे । उनके व्यक्तित्व से संबंधित तीसरी विशेषता है - वातावरण की । वे स्वच्छ, स्वस्थ और सुंदर वातावरण में रहने के अभ्यासी है । विश्वम्भर "मानव" पंत के व्यक्तित्व के बारे में कहते हैं, "जो व्यक्ति शरीर, मन, बुध्दि और आत्मा से पूर्ण सुंदर है उसका नाम पंत है ।"[३४]

६] व्यक्तित्व पर प्रभाव :-

पंत जी अपने जीवन और साहित्य में तीन महापुरुषों से अत्यधिक प्रभावित हैं । वे महापुरुष हैं - महात्मा गांधी, विश्व-कवि रवींद्र तथा योगिराज अरविंद ।

महात्मा गांधी की सत्य और अहिंसा को पंत जी ने जीवन व्यापार और व्यवहार में आवश्यक माना है । "इस युग के महापुरुष

---

३२. कविवर पंत और उनका "आधुनिक कवि" : प्रो.रामरजपाल व्दिवेदी, पृ १३
३३. पंत का व्यक्तित्व : एक रेखाचित्र। : शिवचंद्र नागर, सुमित्रानंदन पंत : संपादिका शचीरानी गुर्टु, पृ. १२
३४. सुमित्रानंदन पंत : विश्वंभर "मानव" पृ. ३

गांधीजी अहिंसा को एक व्यापक संस्कृति के प्रतीक के रूप में ही दे गए हैं जिसे हम मानव चेतना का नवनीत अथवा विश्वमानवता का एक मात्र सार कह सकते हैं । ..... अणु-मृत मानवजाति के पास ब अहिंसा ही एक मात्र जीवन - अवलम्ब तथा संजीवन है । ..... अहिंसात्मक होना व्यापक अर्थ में संस्कृत होना, मानव बनना है । " [३५]

पंत जी योगिराज अरविंद के मौलिक चिंतन से अत्यंत प्रभावित है । उनके चिंतन को पंत जी ने अपने चिंतन में उतार लिया है । विश्व-कल्याण के लिए अरविंद दर्शन को वे इतिहास की सबसे बड़ी देन मानते हैं । "मैं इस विश्व-संक्रांति काल के लिए अरविंद-जीवन दर्शन अत्यंत महत्त्वपूर्ण तथा अमूल्य समझता हूँ । ..... मैं अरविंद को इस युग की अत्यंत महान तथा अतुलनीय विभूति मानता हूँ ।

आज हम छोटी छोटी बातों के लिए पश्चिम के विचारों का मुँह जोतते हैं , उनके वाक्य हमारे लिए ब्रह्म वाक्य बन जातें है और हम अपनी इतनी महान विभूति को पहचान भी नहीं सके हैं, जिनके हिमालय-तुल्य मन:शिखर के सामने इस युग के अन्य विचारक विध्य के चोटियों के बराबर भी नहीं ठहरते । " [३६]

पंत जी ने विश्व-कवि रवीन्द्र के सौंदर्य - दर्शन को अपने प्राणों में उतार लिया है । रवींद्र के साथ अंग्रेजी कवियों - मुख्यत: शेली, वर्डस्वर्थ, कीटस् और टेनिसन - से वे विशेष रूप से प्रभावित रहे हैं ।

---

३५. उत्तरा : प्रस्तावना : सुमित्रानंदन पंत, पृ १६-१७

३६. वही - पृ. २३

क्यों कि इन कवियों से पंत जी को मशीन युग का सौंदर्यबोध और मध्यमवर्गीय संस्कृति का जीवन स्वप्न मिला । रवींद्र के पूर्व और पश्चिम के मेल का उन्हें प्रलोभन रहा है ।

पंत जी के कवि जीवन का आरंभ एक प्रतिभ - प्रकृति के कवि के रूप में हुआ । वीणावादिनी के चरणों में बैठकर उन्होंने "वीणा" उठाई और प्रकृति का राग छेड़ाऔर "व्दिवेदी युग" का अंत किया । धीरे धीरे जीवन जगत और बाह्य परिवेशके आघात संघातों ने उनके निरंतर विकसशील व्यक्तित्व को वस्तुमुखी बना दिया। उनके "युगान्त" ने छायावादी युग का अंत किया । पंत जी की निसर्गदत्त प्रतिभा ने साहित्य की सभी विधाओं को सप्राण स्पर्श किया है । पंत जी की इस सक्रिय मेधा शक्ति की ओर आश्चर्य चकित होकर डा. नगेंद्र कहते है, " हमारे वर्तमान के निर्माताओं में उनका गौरव अव्दितीय है - एक ही व्यक्ति ने अपने अल्पकाल में साहित्य की गति को दो बार दो भिन्न दिशाओं में मोड़ दिया हो - ऐसा उदाहरण अन्यत्र मिलना दुर्लभ है । " [३७]

---

३७. सुमित्रानंदन पंत : डॉ. नगेंद्र , पृ. १६६